समाजीकरण
(Socialization)

जन्म के तुरंत बाद मानवशिशु न सामाजिक होता है और नाही असामाजिक। उस समय वह केवल कुछ जैविक गुणों (Biological Traits) वाला एक जीवित प्राणी होती है। धीरे-धीरे वह समाज की विशेष संस्कृति में पलते हुए सामाजिक प्राणी बन जाता है। वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तःक्रिया (Interaction) करता है जिससे उसमें नये-नये अनुभवों की प्राप्ति होती है। इन अनुभवों के फलस्वरूप बच्चा सामाजिक परम्पराओं नियमों एवं रूढ़ियों के अनुसार व्यवहार करना सीख लेता है। समाज की नियमों को सीखने तथा उसके अनुसार व्यवहार करने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण (Socialization) कहा जाता है।

पहले समाजमनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों का ऐसा विचार था कि समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म से प्रारम्भ होकर कुछ वर्षों के बाद समाप्त हो जाती है। परन्तु अब इस विचारधारा व मान्यता समाप्त हो गयी है और आधुनिक काल में विशेषज्ञों की सहमति इस बात पर हो गयी है कि समाजीकरण की प्रक्रिया किसी उम्र पर आकर रुकती नहीं है बल्कि पूरे जीवनकाल में चलती रहती है।

डीफलीयू, डीएनटोनियो तथा डीफलीयूर (DeFleur, D'Antonio & DeFleur, 1979) के अनुसार "समाजीकरण की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है। समाजीकरण बदलती प्रत्याशाओं एवं मांगों के प्रति समायोजन की एक निरन्तर प्रक्रिया है।"

एटकिन्सन, एटकिन्सन तथा हिलगार्ड (Atkinson, Atkinson & Hilgard, 1983, 1983) के अनुसार "सामाजिक वातावरण द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवहारों को सुगठित करने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है।"

सेकर्ड तथा बैकमैन (Secord and Backman, 1974) के अनुसार "अभी समाजिकरण एक ऐसी अन्तक्रियात्मक प्रक्रिया (Interactional Process) को कहा जाता है जिसमें व्यक्ति का व्यवहार उन समूहों की सदस्यों

(2)

की प्रत्याशाओं के अनुकूल परिवर्तित हो जाता है जिसमें वह सदस्य होता है।"

वार्केल तथा कूपर (Worchel & Cooper, 1979) के अनुसार "सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण व्यवहारों के समूह को जिस प्रक्रिया तथा व्यक्ति सीखता है उसे समाजीकरण कहा जाता है। समाजीकरण मनुष्यों के खुले अंतःक्रिया तथा सामाजिक समूहों द्वारा उनके नियमों एवं मानकों के प्रति अनुपालता दिखाने के लिए दिया गया दबाव का एक संयोग है।"

किम्बलयंग (Kimball Young, 1954) के अनुसार समाजीकरण व्यक्ति का सामाजिक और सांस्कृतिक दुनिया से परिचय कराने उसे समाज तथा उसके विभिन्न समूहों में एक सहभागी सदस्य (Participant member) बनाने तथा उस समाज के मानकों (norms) एवं मूल्यों (Values) को स्वीकार करने को प्रेरित करने वाली प्रक्रिया है।"

वर्केल तथा कूपर (Worchel & Cooper 1979) के अनुसार "वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक व्यक्ति सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण व्यवहारों के भंडार (repertoire) को सीखता है, समाजीकरण कहलाता है।

चैपलिन (Chaplin 1975) ने समाजीकरण की परिभाषा इसी अर्थ में दी है कि:- "किसी संस्कृति-विशेष की परम्पराओं, आदतों, लोकरीतियों एवं लोकप्रथाओं को सीखने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं।"

रोजेनबर्ग एवं टरनर (Rosenberg and Turner 1981) ने भी इसी अर्थ में समाजीकरण की परिभाषा दी है। उनके अनुसार "समाजीकरण का तात्पर्य समाज के मूल्यों (Values) तथा मानदंडों (norms), दूसरे के विचारों, भूमिका-प्रत्याशाओं (role expectations) के प्रति व्यक्ति के अनुकूलन (adaptation) तथा अनुपालन (conformity) से है।"

निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि समाजीकरण सामाजिक सीखना (Social learning) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुनिया से प्रभावित होकर अपने अहम् या आत्म (self) को उनके मानकों (norms) एवं मूल्यों (Values) के अनुसार विकसित करता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया या अवस्थाएँ
(Process or stages of Socialization)

समाजीकरण की प्रक्रिया काफी लम्बी प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु के दिन तक कुछ न कुछ नई अनुक्रियाओं एवं व्यवहारों को सीखता रहता है यही कारण है कि समाजीकरण की प्रक्रिया को एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया (Continuous Process) माना गया है। समाजीकरण की इस लम्बी प्रक्रिया को निम्नलिखित भागों या अवस्थाओं में विभाजित किया गया है :—

(1) पालन-पोषण प्रणाली (Rearing Process) :— व्यक्तियों का समाजीकरण पालन-पोषण प्रणाली द्वारा अधिक प्रभावित होता है। विभिन्न समाज एवं संस्कृति में बच्चों के पालन-पोषण की प्रणाली अलग-अलग होती है। न्यूकाम्ब (Newcomb 1966) के अनुसार जिन बच्चों के पालन पोषण में माता-पिता द्वारा उचित दुलार दिया जाता है तथा बच्चों की देखरेख उनके द्वारा स्वयं किया जाता है, उनमें सामाजिक नियमों को सीखने तथा उसके अनुकूल व्यवहार करने की तीव्र प्रेरणा होती है। फलस्वरूप ऐसे बच्चों में समाजीकरण की प्रक्रिया अधिक तीव्र एवं संतोषजनक होती है। [illegible] में माता-पिता द्वारा उचित दुलार-प्यार नहीं दिया जाता है तथा जिनकी देखरेख स्वयं माता-पिता द्वारा न होकर किसी दूसरे ही व्यक्ति द्वारा की जाती है उनमें समाजीकरण की प्रक्रिया धीमी एवं मन्द गति से दीख पड़ती है। ऐसे बच्चों में अधिक उम्र हो जाने के बाद भी सामाजिकता का लक्षण बहुत अधिक नहीं होता है।

2. बचपन (Childhood) :— समाजीकरण प्रक्रिया की अवस्था बचपन एवं बाल्यावस्था है, जहाँ कुछ दिनों के बाद जल्दी समाजीकरण की क्रिया शुरू हो जाती है। जन्म के बाद बच्चों में रोने की व्यवहार सर्वप्रथम देखा जाता है। फिर बलबलाने का व्यवहार देखा जाता है। जब बच्चा रोता है तो माँ उसे दूध पिलाती है। वह चुप हो जाता है। इस प्रकार वह अपनी माता का ध्यान अपनी ओर रोकर आकर्षित करना सीख लेता है। वह यह भी सीख लेता है कि माँ उसे एक निश्चित समय पर दूध पिलाती है और उसकी आवश्यकता की पूर्ति करती है। बढ़ती हुई आयु के अनुसार उसका यह सामाजिक व्यवहार में बदलाव होने लगता है। वह माँ को देखकर मुस्कराने लगता है और अपरिचित या अजनबी को देखकर रोने लगता है।

प्रायः बच्चों में प्राथमिक समाजीकरण की प्रक्रिया परिवार से शुरू होती है। वह परिवार के लोगों

के व्यवहारों का अनुकरण करके उन्हें सीख लेता है। अनुकरण समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण आधार है। बच्चे अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य व्यक्तियों का अनुकरण करते हैं तथा अपने परिवार के मूल्यों (values), विश्वासों (beliefs), मानदण्डों (norms) आदि को सीख लेते हैं। परिवार के अन्तर्गत लड़कों तथा उनके पिता के विचारों एवं व्यवहारों में समानता पाई जाती है। इसी तरह लड़कियों तथा उनकी माताओं के विचारों एवं व्यवहारों में एक बड़ी समानता पाई जाती है। परिवार के अन्तर्गत बच्चे में स्व (Self) का थोड़ा बहुत निर्माण हो जाता है उसे स्वयं अपने अस्तित्व का बोध होने लगता है।

—चार-पाँच वर्ष की आयु में बच्चे अपने परिवार से बाहर निकल जाते हैं। इस आयु में बच्चे विद्यालय जाने लगते हैं, अन्य बच्चों एवं तथा व्यक्तियों के सम्पर्क में आने लगते हैं। फलत: उनमें समाजीकरण की प्रक्रिया तेज हो जाती है। नैतिक शिक्षा के कारण (Super ego) का विकास शुरू हो जाता है। बच्चे दूसरे परिवार के बच्चों तथा व्यक्तियों के विचारों एवं व्यवहारों से प्रभावित होकर नये मूल्यों, विश्वासों या मानदण्डों को सीखने लगता है। इस प्रकार उनकी द्वितीयक समाजीकरण (secondary socialization) ... में भिन्न-भिन्न मूल्यों एवं विश्वासों को सीखते हैं तथा उन्हें अपने व्यवहारों में उतारने का प्रयास करते हैं।

3. अनुकरण (Imitation):— समाजीकरण अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा भी सम्पन्न होता है। मनोवैज्ञानिक इवान्स (Evans) के अनुसार "दूसरे के व्यवहारों को जानबूझकर या अचेतन रूप से नकल करना, अनुकरण कहलाता है।" अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा बच्चे तथा व्यस्क दोनों ही समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के व्यवहारों को सीखते हैं जिससे उनमें समाजीकरण तेजी से होता है। बच्चे एवं व्यस्क अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों के व्यवहारों का अनुकरण करते हैं। ऐसे व्यक्तियों के व्यवहारों का अनुकरण वे इस उद्देश्य से करते हैं कि ऐसा करने से उनकी सामाजिक मान्यता अधिक बढ़ जायेगी। इस तरह से हम देखते हैं कि अनुकरण भी समाजीकरण की एक प्रमुख प्रक्रिया है।

4. सुझाव (Suggestion):— सुझाव समाजीकरण की एक अन्य प्रमुख प्रक्रिया है। इवान्स (Evans) के अनुसार "सुझाव एक एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति में आलोचना करने की मानसिक क्षमता को कम कर दिया जाता है और व्यक्ति दूसरे स्रोत से मिलने वाली सूचनाओं को बिना सन्देह (doubt), तर्क तथा आलोचना के ही स्वीकार कर लेता है।" शेवर (Shaver) ने यह बतलाया कि बच्चों में सुझाव द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया विशेष रूप से तीव्रता से होती है। माता पिता तथा शिक्षक प्राय: बच्चों को सामाजिक अभियोजन (Social adjustment)

करने में भिन्न-भिन्न ढंग से मदद करते हैं। अपने से बड़ों के साथ कैसे बोलना चाहिए, कैसे व्यवहार करना चाहिए आदि बातों में माता-पिता तथा शिक्षक बच्चों को हमेशा अच्छे सुझाव देते हैं जिससे उनमें समाजीकरण अधिक तेजी से होता है।

(4) सहानुभूति (Sympathy) ! — सहानुभूति की प्रक्रिया द्वारा भी व्यक्ति का समाजीकरण तीव्रता से होता है। जेम्स ड्रेवर (Jemes Drever) के अनुसार, "दूसरे के भावों एवं संवेगों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति पूर्ण चिन्हों को देखकर उसी प्रकार के भावों एवं संवेगों को अपने में अनुभव करने की प्रवृत्ति को सहानुभूति कहते हैं।" *समाज मनोवैज्ञानिकों का सामान्य मत है कि जिन व्यक्तियों में सहानुभूति का गुण अधिक होता है, उसकी सामाजिक मान्यता (Social acceptance) काफी अधिक होती है। उन्हें दूसरे व्यक्तियों के साथ सामाजिक समायोजन (Social adjustment) करने में काफी मदद मिलती है। इनका सब का फल यह होता है कि ऐसे व्यक्तियों में समाजीकरण अधिक तेजी से होता है। जिन व्यक्तियों में सहानुभूति का गुण नहीं होता है उनके प्रति अन्य लोगों का विचार भी सकारात्मक नहीं होता है। ऐसे व्यक्ति हमेशा घृणा के पात्र होते हैं। उनमें सामाजिक अभियोजन करने की क्षमता काफी कम होती है और समाजीकरण की प्रक्रिया भी अवरुद्ध हो जाती है।

* [illegible]

5\. तादात्म्य (Identification) : — जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मॉडल (model) मानकर उसके व्यवहारों को अपनाने की कोशिश करता है तो उस प्रक्रिया को तादात्म्य कहते हैं। बच्चे तथा व्यस्क दोनों ही तादात्म्य द्वारा दूसरे के व्यवहार को सीखते हैं। केलमैन (Kelman) के अनुसार तादात्म्य सामाजिक प्रभाव की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसके सहारे व्यक्ति समाजीकृत (socialized) होता है। तादात्म्य द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के बिलकुल समान व्यवहार करना चाहता है। बच्चों में तादात्म्य का गुण अधिक होता है जिसके कारण वे अपने माता-पिता के व्यवहारों को सीखते हैं। तादात्म्य का दूसरा रूप वह होता है जिसमें व्यक्ति दूसरे के व्यवहार को अपनाने की कोशिश करना चाहता है परन्तु उसकी उम्मीद (Expectation) के अनुसार व्यवहार करने को तत्पर रहता है।

6\. सहयोग (Coopration) : — सहयोग द्वारा भी समाजीकरण की प्रक्रिया सम्पन्न होती है। सहयोग की भावना बच्चों एवं व्यस्कों दोनों में पायी जाती है। सेकर्ड तथा बैकमैन (Secord & Backman) के अनुसार उन व्यस्कों में सहयोग भावना अधिक पायी जाती है जिनके बचपन में उस तरह की भावना विकसित हो गयी होती है। जब व्यक्तियों में सहयोग की भावना तीव्र होती है तो ऐसे व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के साथ किसी भी तरह की सामाजिक परिस्थितियों में समायोजन आसानी से कर लेते हैं। हॉलेण्डर (Hollander) के अनुसार सहयोग की भावना तीव्र होने से बच्चों तथा व्यस्कों दोनों में ही समाजीकरण अधिक तेजी से होता है।

7\. प्रतियोगिता (Competition) जब दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी लक्ष्य (goal) को समान रूप से महत्वपूर्ण ...

उसे प्राप्त करने का पूरा-पूरा प्रयत्न करते हैं तो इस स्थिति को प्रतियोगिता की संज्ञा दी जाती है। प्रतियोगिता की प्रक्रिया द्वारा भी समाजीकरण काफी तेजी से होता है। प्रतियोगिता की भावना रखने वाले व्यक्ति में अधिक धन कमाने अधिक उपलब्धि प्राप्त करने, सामाजिक प्रतिष्ठा पाने आदि की आकांक्षा काफी होती है। फलस्वरूप किसी भी सामाजिक व्यवस्था के भिन्न-भिन्न पहलुओं के बारे को सीखने की कोशिश करते हैं। इससे उनका समाजीकरण तेजी से होता है। दूसरी तरफ जिन व्यक्तियों में इस तरह की प्रतियोगिता की भावना की कमी होती है, उनमें किसी सामाजिक व्यवहार को सीखने की उतनी अधिक तत्परता नहीं दीख पड़ती है। फलस्वरूप, उनमें समाजीकरण की प्रक्रिया भी मन्द गति से आगे बढ़ती है।

8. भाषा (Language) :— भाषा समाजीकरण की एक प्रमुख प्रक्रिया है। भाषा के द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया तेजी से होती है। भाषा के द्वारा व्यक्ति अपनी इच्छाओं आवश्यकताओं आदि को दूसरों तक पहुँचाता है तथा दूसरों की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को समझने की कोशिश करता है। हरलॉक (Hurlock) ने यह बतलाया कि भाषा व्यक्ति को उपयुक्त सामाजिक व्यवहार (appropriate social behaviour) उपयुक्त सामाजिक परिस्थिति में करने में मदद करता है। स्कूल में बच्चों को शिक्षक भिन्न-भिन्न प्रकार के शिष्टाचार की बातें भाषा के माध्यम से बतलाते हैं। माता-पिता बच्चों को घर में किस परिस्थिति में किस प्रकार की सामाजिक व्यवहार करना चाहिए की शिक्षा भाषा के माध्यम से ही देते हैं।

9. प्रचार के माध्यम (Means of Propaganda) :— प्रचार के माध्यम समाजीकरण की एक प्रमुख प्रक्रिया में से है। भाषा के माध्यम द्वारा भी समाजीकरण काफी होती है। प्रचार के भिन्न-भिन्न माध्यम जैसे रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, अखबार आदि द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया बहुत तेजी से होती है। इन माध्यमों द्वारा भिन्न-भिन्न सामाजिक पहलुओं पर अपने-अपने ढंग से जोर डाला जाता है व्यक्तियों को इन माध्यमों द्वारा तरह-तरह की बातें बतलाई जाती हैं। उन सभी बातों का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद, व्यक्ति एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचकर किसी खास तरह का व्यवहार करना सीख लेता है। प्रचार के माध्यमों से विशेषकर टेलीविजन तथा सिनेमा के माध्यम से बच्चे जो देखते हैं उनका अनुकरण कर वैसा ही व्यवहार अपने जीवन में करना प्रारम्भ कर देते हैं। वे इन माध्यमों से नये-नये सामाजिक व्यवहारों को सीख लेते हैं।

10. सामाजिक मनोवृत्ति का विकास (development of Social attitude) :— सामाजिक मनोवृत्ति द्वारा भी सामाजीकरण की प्रक्रिया तेजी से होती है। यदि व्यक्ति में अन्य व्यक्तियों तथा सामाजिक क्रियाओं (Social activities) जैसे - विवाह, जन्म-दिन पार्टी आदि के प्रति अनुकूल सामाजिक मनोवृत्ति का विकास होता है तो उस व्यक्ति का समाजीकरण अधिक तेजी से होता है। जिन व्यक्तियों की सामाजिक मनोवृत्ति भिन्न-भिन्न तरह की सामाजिक प्रथाओं एवं संस्थाओं के प्रति अनुकूल होती है, उनकी सामाजिक गतिशीलता अधिक बढ़ जाती है। फलस्वरूप उन्हें सामाजिक अन्तर्क्रिया

समायोजन (Social adjustment) करने में काफी मदद मिलती है। इस तरह का समायोजन करने में वे अनेकों तरह के सामाजिक व्यवहार करना सीख लेते हैं जिससे उनकी समाजीकरण की प्रक्रिया अधिक तीव्र हो जाती है। इसके विपरीत व्यक्ति में सामाजिक मनोवृत्ति अनुकूल नहीं रहने पर उनकी सामाजिक मान्यता कम हो जाती है। फलस्वरूप वह किसी नये सामाजिक व्यवहार को सीखना चाहता है। इससे उसकी समाजीकरण की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।

(11) किशोरावस्था (Adolescence) :— ~~सामाजिक~~ समाजीकरण की प्रक्रिया की यह प्रमुख अवस्था है। इस अवस्था की मुख्य विशेषता यह है कि बच्चे अपने माता-पिता के बंधन से स्वतंत्र होने की इच्छा ~~रखते है~~ करने लगते हैं। इसी अवस्था में लड़के तथा लड़कियों में अनेक शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होते हैं। उनके सम्पर्क का क्षेत्र काफी बढ़ जाता है। फलतः उनमें विसमाजीकरण (desocialization) तथा पुनर्समाजीकरण (resocialization) की प्रक्रिया तेज हो जाती है। इस अवस्था में बच्चे अपने परिवार तथा समाज से अर्जित बहुत से मूल्यों, विश्वासों या मानदण्डों को छोड़ देते हैं और नये मूल्यों, ~~विश्वासों या~~ विश्वासों या मानदण्डों को सीख लेते हैं।

(12) वयस्क अवस्था (Adulthood) :— समाजीकरण की प्रक्रिया की यह अवस्था है। इस अवस्था की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ व्यक्ति वैवाहिक जीवन को निभाने की ओर सक्रिय हो जाता है। जीविकोपार्जन इस अवस्था की एक मुख्य विशेषता है। बीमारी, दुर्घटनाएँ आदि भी इस अवस्था की घटनाएँ हैं। इन घटनाओं का निश्चित प्रभाव व्यक्ति के समाजीकरण पर पड़ता है। लेकिन इस अवस्था की समस्याओं का निराकरण सामान्यरूप से नहीं होने पर कई तरह के असामाजिक व्यवहार विकसित हो जाते हैं।

(13) वृद्धावस्था (Oldage) :— समाजीकरण प्रक्रिया की यह अंतिम अवस्था है। इस अवस्था में समाजीकरण की प्रक्रिया काफी मंद पड़ जाती है। सच तो यह है कि इस अवस्था में भी व्यक्ति नये मूल्यों, विश्वासों या मानदण्डों को सीखता है। इस अवस्था में व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक रूप से निर्बल बन जाता है। उसकी शारीरिक शक्ति कमजोर पड़ जाती है। आँखों की रोशनी घट जाती है। कर्मेन्द्रियाँ कमजोर हो जाती हैं। आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। और वह दूसरों पर आश्रित हो जाता है। मृत्यु सामने नजर आने लगती है। फलतः अध्यात्म की ओर वह मुड़ जाता है। धार्मिक मूल्यों पर वह अधिक बल देने लगता है और यही उसकी शांति का एक मात्र उपाय रह जाता है।

इस तरह हम देखते हैं कि समाजीकरण की प्रक्रिया काफी लम्बी एवं जटिल होती है। व्यक्ति का समाजीकरण अनेक प्रक्रियों द्वारा सम्पन्न होता है।